मेरी त्रुटि – मेरी सीख
(My Mistake – My Lesson)

राखी अग्रवाल (सहायक अध्यापक)
कंपोजिट विद्यालय जनैटा, विकास क्षेत्र – बनियाखेड़ा,
जनपद – संभल, उत्तर प्रदेश

उद्देश्य–

संविलियन विद्यालय जनैटा विकास क्षेत्र बनियाखेड़ा जनपद संभल में कक्षा शिक्षण के समय यह देखा कि विद्यार्थी प्रायः लिखित विषय– वस्तु में बहुत त्रुटियां करते, जिससे उनको निपुण भारत के लक्ष्यों को प्राप्त कराने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था। अधिकांश विद्यार्थी विद्यालय से अनुपस्थित भी रहते थे। अभिभावक इस ओर कोई ध्यान नहीं देते थे। इस समस्या का समाधान करने के लिए शिक्षिका द्वारा अपनी सकारात्मक और नवाचारी सोच के साथ वर्ष 2024 में 'मेरी त्रुटि मेरी सीख' कार्यपुस्तिका बनवाकर नवाचार की शुरुआत की। जिसका उद्देश्य था– बच्चों द्वारा बार–बार की जाने वाली वर्तनी,लेखन संबंधित त्रुटियों को स्थाई रूप से सुधारना, स्व–मूल्यांकन, लेखन कौशल का विकास करना तथा विद्यालय में विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति बढ़ाना।

(मेरी त्रुटि मेरी सीख कार्यपुस्तिका प्रस्तुत करते विद्यार्थी)

क्रियान्वयन –

प्रत्येक विद्यार्थियों के लिए 'मेरी त्रुटि मेरी सीख' कार्य पुस्तिका का निर्माण करने हेतु विद्यालय में आयोजित विद्यालय प्रबंध समिति की बैठक में प्रत्येक शनिवार विद्यालय में आयोजित अभिभावक– शिक्षक मीटिंग में तथा विद्यार्थियों के अभिभावकों का व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर इस नवाचार हेतु प्रेरित किया गया। अभिभावकों एवं विद्यालय के शिक्षकों के सहयोग से विद्यालय में अध्यनरत सभी नामांकित विद्यार्थियों को 'मेरी त्रुटि मेरी सीख' कार्य पुस्तिका का निर्माण किया गया। इस नवाचार के अंतर्गत जब कोई विद्यार्थी कक्षा – कार्य गृह –कार्य या श्रुतलेख के दौरान किसी शब्द की वर्तनी अशुद्ध लिखता है तो उस शब्द को अध्यापिका द्वारा लाल रंग के पेन से चिन्हित किया जाता है तथा उस शब्द की शुद्ध वर्तनी उसी विषय की कार्यपुस्तिका में उस विद्यार्थी को लिखकर दिखाई जाती है। साथ ही विद्यार्थियों को उच्चारण के साथ समझाया भी जाता है। अब विद्यार्थी अपने सभी विषयों के अशुद्ध शब्दों को अपनी 'मेरी त्रुटि मेरी सीख' कार्य पुस्तिका में अंकित करते हैं। अध्यापिका द्वारा लिखकर दी गई शुद्ध वर्तनी को देखकर विद्यार्थी अपनी त्रुटि किये गये शब्द को शुद्ध करके तीन बार स्पष्ट रूप से लिखते हैं।

(त्रुटि का चिन्हांकन करती अध्यापिका का चित्र)

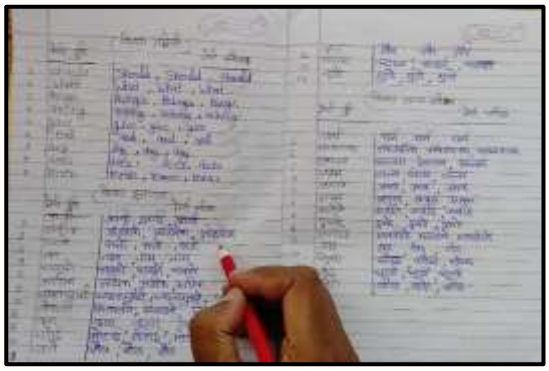

(मेरी त्रुटि मेरी सीख कार्यपुस्तिका का चित्र)

इस प्रकार कक्षा 6 से 8 के लिए इस नवाचार को और अधिक रुचिकर बनाने के लिए प्रत्येक विद्यार्थी सप्ताह के अंतिम कार्यदिवस में अपनी कार्यपुस्तिका में विषयवार कुल कितने शब्द लिखे तथा उसके सापेक्ष कितनी त्रुटियां की, शिक्षिका के मार्गदर्शन में इसके विषयवार आंकड़े सारणी बनाकर एकत्र करते हैं, उनका प्रतिशत निकालते हैं। इसके पश्चात् शिक्षिका ने किसी एक विद्यार्थी की पुस्तिका के विषयवार आंकड़ों के आधार पर कक्षा के अन्य विद्यार्थियों के समक्ष बोर्ड पर बार ग्राफ बनाकर मार्गदर्शित करती है और अन्य सभी विद्यार्थियों को भी ग्राफ बनाने के लिए प्रेरित करती है। सभी विद्यार्थी विषयवार अपनी–अपनी त्रुटियों के आंकड़ों को बार ग्राफ द्वारा प्रदर्शित करते हैं। शिक्षिका विद्यार्थियों को ग्राफ बनाने के लिए अलग–अलग रंगों का प्रयोग करना बताती है। उनको A4 साइज़ पेपर, रंग आदि भी उपलब्ध कराती है। ग्राफ बनाने में विद्यार्थी अलग–अलग रंगों का प्रयोग करते हैं। जैसे– जिस विषय में सबसे कम त्रुटि हुईं। उसको सभी विद्यार्थियों द्वारा हरे रंग से तथा जिस विषय में सबसे अधिक त्रुटि हुई; उसको लाल रंग से प्रदर्शित किया जाता है। सभी विद्यार्थी क्रमशः त्रुटि के अनुरूप पीले, नारंगी, गुलाबी व नीले रंग से संबंधित विषय के बार को प्रदर्शित करते हैं। विद्यालय में इस नवाचार को केवल हिंदी विषय तक ही सीमित न रखते हुए अन्य विषयों के साथ भी सम्मिलित किया जा रहा है।

(विषयवार त्रुटियों का प्रतिशत निकाल ग्राफ द्वारा दर्शाते विद्यार्थी)

(आत्मविश्वास से भरी बालिकाएं)

प्रभाव–

विद्यालय में इस नवाचार का प्रयोग करने से विद्यार्थियों की शब्दों की लेखन संबंधी त्रुटियों की पुनरावृति में कमी हुई है क्योंकि एक ही गलती को बार–बार लिखने व सुधारने से विद्यार्थी भविष्य में उस शब्द को सही लिखने के प्रति सजग हो गये हैं। नियमित अभ्यास से विद्यार्थी शुद्ध वर्तनी लिखने लगे। स्वयं गलती पहचानने व सुधारने से विद्यार्थियों में तार्किक क्षमता एवं आत्मनिरीक्षण की आदत विकसित हुई है। विद्यार्थी अपनी त्रुटियों को अनदेखा करने के स्थान पर उनको स्वीकार करने लगे हैं, जिससे उनकी तार्किक व विश्लेषण क्षमता में वृद्धि हुई है। विद्यार्थियों में सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ है। उनके अधिगम स्तर में भी वृद्धि हुई है। विद्यार्थियों में स्व– मूल्यांकएवं जिम्मेदारी का भाव भी उत्पन्न हुआ है।

जो विद्यार्थी किसी शब्द को पहले सुधार चुका है, वह दूसरे साथी को समझाने में मदद करता है। इस प्रकार विद्यार्थियों में सहपाठी शिक्षण कौशल का भी विकास देखा गया है। इस नवाचार के द्वारा कक्षा में विद्यार्थियों के मध्य आपसी समन्वय भी बढ़ा है। कक्षा में सभी विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता बढ़ी है। इस नवाचार के क्रियान्वयन में विद्यालय के सभी शिक्षकों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। शिक्षक समाज में भी इस नवाचार को पहचान मिली। 'मेरी त्रुटि मेरी सीख' पूरे जनपद के लिए प्रेरणा बनी, जो विद्यार्थियों को 21वीं सदी का स्टैम वाला दिमाग दे रही है। विद्यार्थियों ने भी सीखा त्रुटि से डरना नहीं, त्रुटि से सीखना है, 'मेरी त्रुटि मेरी सीख' आज विद्यार्थियों के भरोसे का पुल बन चुकी है।

विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति एवं ठहराव में वृद्धि हुई है तथा आज संविलियन विद्यालय जनैटा विकास क्षेत्र बनिया खेड़ा में 500 से भी अधिक विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। विद्यालय निपुण विद्यालय घोषित हुआ है।

(NEP2020, FLN, STEM लर्निंग के प्रति सजग विद्यार्थी)

(मेरी त्रुटि मेरी सीख विद्यार्थियों के भरोसे का पुल)

विद्यार्थियों ने राज्य एवं जनपद स्तर पर अपने लेखन कौशल का रचनात्मक रूप में प्रदर्शन किया है। राज्य स्तरीय ISBN प्रमाणित **'बाल-मन'** पुस्तक में कुल प्रकाशित 134 लेखों में विद्यालय की तीन छात्राओं शिफा, राबिया तथा फिजा के लेखों को भी स्थान दिया गया है।

(विद्यार्थियों का लेख)

(अमर उजाला में प्रकाशित विद्यार्थियों के लेख)

वर्ष 2025– 26 में प्रतिष्ठित समाचार पत्र अमर उजाला के पेज बाल कोना में विद्यालय के कल्पि, अर्श, जैरा, रजा, सानिया, इफरा, अदीवा आदि विद्यार्थियों के लेख प्रकाशित हुए हैं। बालिकाओं में इतना आत्मविश्वास बढ़ा कि उन्होंने राष्ट्रीय समाचार पत्र अमरउजाला की प्रतियोगिता खबरों के लिटिल मास्टर में भी अपना लेखीकरण कर प्रतिभाग किया। विद्यालय की छात्राओं द्वारा वर्ष 2025– 26 में मीना मंच के अंतर्गत रचनात्मक लेखन कार्य करते हुए कॉमिक बुक का निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण भी किया गया है। उनका जनपद स्तर पर चयन भी किया गया है। वर्ष 2025– 26 में विद्यालय की छात्राएं राहेमीन, राबिया एवं गुलिस्ता ब्लॉक व जनपद स्तर पर राष्ट्रीय आविष्कार अभियान प्रतियोगिता में भी चयनित हुई हैं। नवाचार से समाज में विद्यालय की अच्छी छवि विकसित हुई है। अभिभावकों का विद्यालय के प्रति विश्वास बढ़ा है। विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति और ठहराव में वृद्धि भी हुई है। विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की भावना विकसित हुई है तथा वे समाज के जिम्मेदार नागरिक बन रहे हैं।